तेरा राज्य आए : युगांत-विद्या का सिद्धांत

अध्याय 1

"सृष्टि का लक्ष्य"

Manuscript

thirdmill
Biblical Education. For the World. For Free.

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2021के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी भाग को प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इनकोरपोरेशन, 316, लाइव ओक्स बुलेवार्ड, कैसलबरी, फ्लोरिडा 32707 की लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या अध्ययन के उद्देश्यों के लिए संक्षिप्त उद्धरणों के अतिरिक्त किसी भी रूप में या किसी भी तरह के लाभ के लिए पुनः प्रकशित नहीं किया जा सकता।

पवित्रशास्त्र के सभी उद्धरण बाइबल सोसाइटी ऑफ़ इंडिया की हिन्दी की पवित्र बाइबल से लिए गए हैं। सर्वाधिकार © The Bible Society of India

थर्ड मिलेनियम के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम एक लाभनिरपेक्ष सुसमाचारिक मसीही सेवकाई है जो पूरे संसार के लिए मुफ्त में बाइबल आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

संसार के लिए मुफ़्त में बाइबल आधारित शिक्षा।

हमारा लक्ष्य संसार भर के हज़ारों पासवानों और मसीही अगुवों को मुफ़्त में मसीही शिक्षा प्रदान करना है जिन्हें सेवकाई के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है। हम इस लक्ष्य को अंग्रेजी, अरबी, मनडारिन, रूसी, और स्पैनिश भाषाओं में अद्वितीय मल्टीमीडिया सेमिनारी पाठ्यक्रम की रचना करने और उन्हें विश्व भर में वितरित करने के द्वारा पूरा कर रहे हैं। हमारे पाठयक्रम का अनुवाद सहभागी सेवकाइयों के द्वारा दर्जन भर से अधिक अन्य भाषाओं में भी किया जा रहा है। पाठ्यक्रम में ग्राफिक वीडियोस, लिखित निर्देश, और इंटरनेट संसाधन पाए जाते हैं। इसकी रचना ऐसे की गई है कि इसका प्रयोग ऑनलाइन और सामुदायिक अध्ययन दोनों संदर्भों में स्कूलों, समूहों, और व्यक्तिगत रूपों में किया जा सकता है।

वर्षों के प्रयासों से हमने अच्छी विषय-वस्तु और गुणवत्ता से परिपूर्ण पुरस्कार-प्राप्त मल्टीमीडिया अध्ययनों की रचना करने की बहुत ही किफ़ायती विधि को विकसित किया है। हमारे लेखक और संपादक धर्मवैज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित शिक्षक हैं, हमारे अनुवादक धर्मवैज्ञानिक रूप से दक्ष हैं और लक्ष्य-भाषाओं के मातृभाषी हैं, और हमारे अध्यायों में संसार भर के सैकड़ों सम्मानित सेमिनारी प्रोफ़ेसरों और पासवानों के गहन विचार शामिल हैं। इसके अतिरिक्त हमारे ग्राफिक डिजाइनर, चित्रकार, और प्रोडयूसर्स अत्याधुनिक उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग करने के द्वारा उत्पादन के उच्चतम स्तरों का पालन करते हैं।

अपने वितरण के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए थर्ड मिलेनियम ने कलीसियाओं, सेमिनारियों, बाइबल स्कूलों, मिशनरियों, मसीही प्रसारकों, सेटलाइट टेलीविजन प्रदाताओं, और अन्य संगठनों के साथ रणनीतिक सहभागिताएँ स्थापित की हैं। इन संबंधों के फलस्वरूप स्थानीय अगुवों, पासवानों, और सेमिनारी विद्यार्थियों तक अनेक विडियो अध्ययनों को पहुँचाया जा चुका है। हमारी वेबसाइट्स भी वितरण के माध्यम के रूप में कार्य करती हैं और हमारे अध्यायों के लिए अतिरिक्त सामग्रियों को भी प्रदान करती हैं, जिसमें ऐसे निर्देश भी शामिल हैं कि अपने शिक्षण समुदाय को कैसे आरंभ किया जाए।

थर्ड मिलेनियम a 501(c)(3) कारपोरेशन के रूप में IRS के द्वारा मान्यता प्राप्त है। हम आर्थिक रूप से कलीसियाओं, संस्थानों, व्यापारों और लोगों के उदार, टैक्स-डीडक्टीबल योगदानों पर आधारित हैं। हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए, और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार इसमें सहभागी हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org को देखें।

विषय-वस्तु

प्रस्तावना 1
पुराने नियम की अपेक्षाएं 1
सृष्टि 2
छुटकारा 3
आदम 4
नूह 4
अब्राहम 5
मूसा 5
दाऊद 7
अन्त का समय 7
नए नियम की वास्तविकताएँ 10
बाइबलीय धर्मविज्ञान का विकास 10
ऐतिहासिक जटिलताएँ 12
अपेक्षाएँ जो पूरी न हुईं 12
भविष्यवाणी से जुड़े रहस्य 13
वाचा से जुड़ी शर्तें 14
दिव्य स्वतंत्रता 15
समायोजित अपेक्षाएँ 16
उद्घाटन 18
निरंतरता 19
परिपूर्णता 20
उपसंहार 22

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

तेरा राज्य आए : युगांत-विद्या का सिद्धांत

अध्याय एक

"सृष्टि का लक्ष्य"

प्रस्तावना

मसीह का लगभग प्रत्येक अनुयायी प्रभु की प्रार्थना से परिचित है और यह हमें प्रार्थना करना सिखाती है, "तेरा राज्य आए। तेरी इच्छा जैसे स्वर्ग में पूरी होती है वैसे ही पृथ्वी पर भी हो।" लेकिन ये वचन कितने भी परिचित क्यों न हों, उनका महत्व अक्सर हमारी समझ से बाहर है। इन प्रार्थनाओं में, यीशु ने इतिहास और सृष्टि के लिए परमेश्वर के लक्ष्य को सारांशित किया। उसने समझाया कि हम क्यों इस ग्रह पर रहते हैं, और हमारे उद्धारकर्ता के रूप में वह क्यों आया। और कारण सरल है : परमेश्वर पूरी पृथ्वी को अपने स्वर्गीय राज्य के विस्तार में बदल रहा है। जब वह पूरा कार्य कर चुका होगा, तो उसकी इच्छा पृथ्वी पर ठीक वैसे ही पूरी हो जाएगी जैसे कि वह पहले ही स्वर्ग में पूरी हो चुकी है। लेकिन तब तक, परमेश्वर के राज्य की परिपूर्णता की ओर कार्य करने और उसके लिए प्रार्थना करना हमारा कर्त्तव्य है।

यह हमारी श्रृंखला *तेरा राज्य आए* का पहला अध्याय है : *युगांत-विद्या का सिद्धांत।* इस श्रृंखला में, हम मसीह में परमेश्वर द्वारा इस पृथ्वी पर किये गए कार्यों के कई पहलूओं पर विशेष जोर देने के साथ, इसके अंतिम या निर्णायक स्थिति का पता लगाएंगे। हमने इस अध्याय का शीर्षक रखा है "सृष्टि का लक्ष्य" क्योंकि हम देख रहे होंगे कि कैसे इतिहास के लिए परमेश्वर की योजना उसके राज्य को पूरा करने के अंतिम लक्ष्य तक ले जाती है।

शुरू करने से पहले, हमें उस तकनीकी शब्द पर ध्यान देना चाहिए जो अध्ययन के इस क्षेत्र का वर्णन करता है, जिसका नाम है, "एस्केटोलॉजी।" एस्केटोलॉजी शब्द दो यूनानी शब्दों से बनता है : एस्केटोस *(ἔσχατος)*, अर्थात "अंत" या "अंतिम"; और लोगोस (*λόγος)*, जिसका अर्थ इस मामले में "अध्ययन" है। इस तरह, "एस्केटोलॉजी" "युग के अंत की विद्या" या "अंतिम बातों का सिद्धांत" है। मोटे तौर पर समझा जाए, तो युगांत-विद्या में अंतिम दिनों की पूरी अवधि शामिल है जो यीशु के जीवन और सेवा के साथ शुरू हुई और जब वह वापस आता है तो यह पूरी हो जाएगी।

"सृष्टि का लक्ष्य" पर हमारा अध्याय दो ऐतिहासिक अवधियों पर ध्यान केंद्रित करेगा। सबसे पहले हम अंतिम समयों के लिए पुराने नियम की अपेक्षाओं पर विचार करेंगे। और दूसरा, हम उनके लिए नए नियम की वास्तविकताओं के साथ उनका मिलान करेंगे। आइए इतिहास के अंत के लिए पुराने नियम की अपेक्षाओं के साथ शुरू करते हैं।

पुराने नियम की अपेक्षाएं

पुराने नियम में, परमेश्वर के राज्य के तीन चरणों में प्रकट होने की अपेक्षा थी : ब्रह्माण्ड और उसके जीवों की शुरूआती सृष्टि; मानवता के पाप में गिरने के कारण आवश्यक हुआ छुटकारे का एक लंबा समयकाल; और अंततः, चिरस्थायी अंत समय — ब्रह्माण्ड की अंतिम स्थिति, जब उद्धार पूरा हो जाता है, जब परमेश्वर का स्वर्गीय राज्य पृथ्वी को भर देता है। *"एस्केटोलॉजी" शब्द के समान,* ईश्वरीय-ज्ञान वाला "एस्केटोन" शब्द भी यूनानी शब्द एस्केटोस *(ἔσχατος)* से आता है। इसलिए, स्वाभाविक रीति से, एस्केटोलॉजी में जिन घटनाओं का हम अध्ययन करते हैं वे अंत समय के दौरान घटित होने वाली हैं।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

इतिहास के लिए पुराने नियम की इस समझ के अनुसार, हम तीन भागों में परमेश्वर के राज्य के चरम उत्कर्ष के बारे में, पुराने नियम की अपेक्षाओं का पता लगाएंगे। सबसे पहले हम उन योजनाओं का उल्लेख करेंगे जिन्हें परमेश्वर ने सृष्टि के समय प्रकट किया। दूसरा, हम उन आशाओं के बारे में बातें करेंगे जिन्हें उसने छुटकारे के इतिहास के दौरान प्रकट किया। और तीसरा, हम अंत समय की कुछ भविष्यवाणी वाली तस्वीरों पर विचार करेंगे। आइए पहले हम योजनाओं को देखें जिन्हें परमेश्वर ने सृष्टि के समय प्रगट किया।

सृष्टि

ज्यादातर मसीही लोग उत्पत्ति 1, 2 में विस्तृत सृष्टि की परमेश्वर के कार्य से परिचित हैं। उत्पत्ति 1 सिखाता है कि परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की और उसे व्यवस्थित किया। उसने ब्रह्माण्ड के भीतर सभी क्षेत्रों की रचना की जैसे पानी, सूखी भूमि, और आकाश। और उसने उन सभी जीवों की रचना की जो इन क्षेत्रों में निवास करते हैं, जैसे मछली, भूमि के जानवर, और पक्षी। और निश्चित रूप से, उसने स्वयं पृथ्वी और उसके जीवों सहित पूरी सृष्टि पर प्रशासन करने और राज करने के लिए मनुष्यों की रचना की। उत्पत्ति 1:27-28 में मूसा ने जो लिखा उसे सुनिए :

> परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया, अपने ही स्वरूप के अनुसार परमेश्वर ने उसको उत्पन्न किया; नर और नारी करके उसने मनुष्यों की सृष्टि की। परमेश्वर ने उनको आशीष दी और उनसे कहा, “फूलो-फलो और पृथ्वी में भर जाओ, और उसको अपने वश में कर लो। और समुद्र की मछलियों, तथा आकाश के पक्षियों, और पृथ्वी पर रेंगनेवाले सब जन्तुओं पर अधिकार रखो” (उत्पत्ति 1:27-28)।

प्राचीन मध्य-पूर्व की शब्दावली में, परमेश्वर का अभिप्राय था कि मानवता उसके “दास” या दास राजा हों। परमेश्वर, जो कि महान “अधिपति-राजा” या सम्राट है उसके स्थान पर सृष्टि के ऊपर शासन करना हमारा काम था। इस विचार को इस तथ्य से बल मिलता है कि मनुष्यों को “परमेश्वर के स्वरूप” में सृजा गया था। प्राचीन संसार में, राजाओं ने स्वयं की मूर्तियों और अन्य चित्रों को अपने पूरे राज्य भर में लगाया। यह उस देश और उसके लोगों पर उनके अधिकार एवं शासन को इंगित करने का एक तरीका था, और स्वयं को सम्मान एवं गौरव दिलाने का एक तरीका था। इसलिए, जब परमेश्वर ने मनुष्यों को अपने स्वरूप में बनाया, तो उसने संकेत दिया कि उसकी योजना एक सांसारिक राज्य को बनाने की थी। हम जानते हैं कि संसार की इस शुरूआती व्यवस्था से, और उस भूमिका से जो उसने मानवता को दी थी परमेश्वर प्रसन्न था, क्योंकि उत्पत्ति 1:31 में, उसने कहा कि उसने जो कुछ भी सृजा था वह “बहुत अच्छा” था। लेकिन, उसके पास इसे और बेहतर बनाने की योजना थी। उत्पत्ति 1:27-28 को देखिए :

> परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया, ... और उनसे कहा, “ ... पृथ्वी में भर जाओ, और उसको अपने वश में कर लो (उत्पत्ति 1:27-28)।

परमेश्वर सिर्फ एक ही जोड़ा नहीं चाहता था जो मुश्किल से उसकी बनाई चीज़ों का प्रबंध करे। इसके विपरीत, वह चाहता था कि वे पृथ्वी पर भर जाएँ और इसे उसके सांसारिक राज्य में बदल दें।

धर्मविज्ञानी सामान्यतः इन पदों को “सांस्कृतिक अध्यादेश” के रूप में संदर्भित करते हैं, क्योंकि उन्हें पूरे संसार भर में संस्कृति को बनाने की मनुष्य की जरूरत हैं। इसका अर्थ है कि न केवल संसार को भरने के लिए पर्याप्त लोगों को उत्पन्न करने के लिए प्रजनन करना, बल्कि पूरे संसार भर में मानव संस्कृति का निर्माण करना भी है — परिवारों और सरकारों, खेती और पशुपालन, और यहाँ तक कि कला और विज्ञान जैसी चीज़ें भी।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

सांस्कृतिक अध्यादेश के निहितार्थ, उत्पत्ति 2 में स्पष्ट हो जाते हैं, जहाँ परमेश्वर ने अदन की भूमि में एक वाटिका लगाई। विशेष रूप से, वाटिका ने उस सिद्धता का उदाहरण प्रस्तुत ककर रही थी जिसे परमेश्वर चाहता था कि यह पृथ्वी मनुष्य के नेतृत्व में प्राप्त करे। जैसा कि हम उत्पत्ति 2:15 में पढ़ते हैं :

> **तब यहोवा परमेश्वर ने आदम को लेकर अदन की वाटिका में रख दिया, कि वह उसमें काम करे और उसकी रक्षा करे (उत्पत्ति 2:15)।**

मनुष्य का कार्य वाटिका को विकसित करना था।
लेकिन मूसा ने यहाँ जिन शब्दों के जोड़े का इस्तेमाल किया — “काम” और “रक्षा करे” — वह एक तकनीकि भाषा थी। मूसा ने गिनती 3:8 में मिलाप वाले तम्बू में याजकों के कार्य का वर्णन करने के लिए इन्हीं शब्दों के जोड़े का इस्तेमाल किया।

इस तरह, उत्पत्ति 1 में दास राजा के समान, और अध्याय 2 में याजकीय सेवक के रूप में मानवता की भूमिका की संयुक्त तस्वीर, हमें बताते हैं कि मनुष्य परमेश्वर के शाही एवं याजकीय स्वरूप हैं। हमारा काम उसके शासन का विस्तार करना है जब तक कि यह संसार को भर नहीं देता, और पूरे संसार को विकसित करना है जब तक कि सब कुछ अदन की वाटिका से मिलता-जुलता नहीं हो जाता है। और मानवता के लिए यह भूमिका बाइबल के युगांत-विद्या की पहली झलक प्रदान करता है। यह इंगित करता है कि परमेश्वर की यह योजना है कि पृथ्वी को ऐसे स्वरूपों से भरा जाये, जो उसके स्थान पर सृष्टि के ऊपर शासन करने के द्वारा उसकी सेवा एवं उसका सम्मान करे।

परमेश्वर के राज्य के लिए पुराने नियम की अपेक्षाओं पर विचार करने के बाद जो कि सृष्टि के समय स्थापित की गई थी, आइए छुटकारे के इतिहास के साथ जुड़ी अपेक्षाओं की ओर बढ़ते हैं।

छुटकारा

सभी मसीही लोगों को उत्पत्ति 3 में दर्ज पाप में मानवता के पतन की कहानी को जानना चाहिए। वाटिका में काम करने और उसकी रक्षा करने के लिए परमेश्वर ने आदम और हव्वा को वहाँ रखा। लेकिन वाटिका में, शैतान ने सर्प के माध्यम से बात की। उसने हव्वा को भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष से फल खाने के लिए बहकाया, जिसे परमेश्वर ने मना किया था। फिर हव्वा ने फल आदम को दिया और उसने भी उसे खाया। इस पाप के कारण, परमेश्वर ने पूरी मानवता को शापित किया और ऐसा लगा कि उसके युगांतरकारी वाले राज्य की महान आशा समाप्त हो गई है। लेकिन परमेश्वर ने दया करके छुटकारे की एक योजना को प्रस्तुत किया जो व्यक्तिगत उद्धार के माध्यम से लोगों को बचाएगी, और पृथ्वी पर उसके महान मसीहा वाले राज्य की आशा को बहाल करेगी।

छुटकारे की इस योजना को सबसे पहले उत्पत्ति 3:15 में पेश किया गया जब परमेश्वर ने सर्प से यह कहा :

> **मैं तेरे और इस स्त्री के बीच में, और तेरे वंश और इसके वंश के बीच में बैर उत्पन्न करूँगा; वह तेरे सिर को कुचल डालेगा और तू उसकी एड़ी को डसेगा (उत्पत्ति 3:15)।**

धर्मविज्ञानी छुटकारे की इस पेशकश को *प्रोटो-यूआंगेलियन* या “पहला सुसमाचार” कहते हैं, क्योंकि मानवता के पाप में पतन के बाद उद्धार की यह पहली पेशकश है।

> **क्या आप जानते हैं, कि कुछ बाइबल के शिक्षक मानते हैं कि उत्पत्ति 3:15 बाइबल में सबस महत्वपूर्ण पद हो सकता है क्योंकि यहाँ पर पतन के तुरंत बाद हमें एक प्रतिज्ञा प्राप्त होती है कि हमारे पाप की समस्या के साथ निपटारा करने के**

> लिए परमेश्वर एक छुटकारा देने वाले को भेजेगा। वह सर्प और स्त्री को बताता है कि उनके दो बीजों के बीच शत्रुता रहेगी। सर्प स्त्री के बालक की ऐड़ी को डसेगा, लेकिन वह बालक उस सर्प के सिर को कुचल डालेगा। और मूल रूप से, बाकी की बाइबल उस सिर के कुचलने की महान छुटकारे वाली कहानी को प्रकट करती है जो कि अंततः कलवरी में क्रूस पर घटित होती है, सिर को कुचलना जिसे हम साझा करते है वह रोमियों 16:20 पर आधारित है।
>
> — डॉ. डैनी एकिन

जब परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की कि स्त्री का बीज सर्प के बीज को हरा देगा, तो उसने संकेत दिया कि मानवता पाप के अभिशाप से छुड़ाई जाएगी। और छुटकारे की लम्बी अवधि के दौरान, परमेश्वर अपने छुटकारे के कामों के माध्यम से इस अपेक्षा की पुष्टि करता रहा — विशेष कर उसकी वाचा के साथ जुड़े कार्य।

पुराने नियम में, आदम के साथ अपनी वाचा की शुरूआत करते हुए, परमेश्वर ने छुटकारे वाली पाँच प्रमुख वाचाओं को बाँधा।

आदम

जब आदम ने अदन की वाटिका में परमेश्वर के खिलाफ़ पाप किया, तो परमेश्वर ने उसे प्रोटो-यूआंगेलियन या “पहले सुसमाचार” के माध्यम से उद्धार की पेशकश की। इससे यह अपेक्षा उत्पन्न हुई कि संसार भर में उसके राज्य के लिए परमेश्वर की योजना अंततः पूरी होगी। लेकिन सर्प के बच्चों और हव्वा के बच्चों के बीच संघर्ष के द्वारा इसके विकास की पहचान होगी। वास्तव में, उत्पत्ति 4, 5 संकेत देते हैं कि आदम और हव्वा के विश्वासयोग्य पुत्र शेत के वंशज उनके हत्यारे पुत्र के वंशजों के साथ निरंतर तनाव में थे। शुरूआत से ही, पूरी मानव जाति परमेश्वर के उद्देश्यों को पूरा करने वालों और परमेश्वर के ख़िलाफ़ विद्रोह करने वालों के बीच विभाजित की गई है।

आदम के बाद आई कई पीढ़ियों के बाद, परमेश्वर ने नूह के साथ अपनी छुटकारे की दूसरी प्रमुख वाचा को बाँधा।

नूह

उत्पत्ति 6–9, नूह के दिनों में संसार को नष्ट करने वाले जल प्रलय को रिकॉर्ड करता है। इस कहानी के अन्तर्गत, उत्पत्ति 8:21–9:17 उस वाचा की व्याख्या करता है जिसे परमेश्वर ने नूह के माध्यम से बाँधी। पृथ्वी को फिर जल प्रलय से नष्ट नहीं करने की प्रतिज्ञा करने के संदर्भ में, परमेश्वर ने प्रकृति की व्यापक स्थिरता को भी स्थापित किया। सृष्टि पर शासन करने और संसार को परमेश्वर के स्वरूपों के साथ भरने के अपने उद्देश्यों को पूरा करने के लिए मानवता को सक्षम बनाने हेतु उसने यह किया। और इसने यह अपेक्षा पैदा की कि मानवता का विकास, और इस तरह परमेश्वर के राज्य का विकास, आगे को वैश्विक तबाही के बिना आगे बढ़ेगा। लेकिन उत्पत्ति 8:22 को सुनिए, जहाँ परमेश्वर ने इस योग्यता को जोड़ा :

> अब से जब तक पृथ्वी बनी रहेगी, तब तक बोने और काटने के समय, ठण्ड और तपन, धूपकाल और शीतकाल, दिन और रात, निरन्तर होते चले जाएँगे (उत्पत्ति 8:22)।

प्रकृति की स्थिरता की गारंटी केवल "अब से जब तक पृथ्वी बनी रहेगी" तब तक दी गई थी। कहने का अर्थ है, केवल सृष्टि की वर्तमान व्यवस्था के अंत तक। इसने इस अपेक्षा को स्थापित किया कि वर्तमान प्राकृतिक व्यवस्था को तब प्रतिस्थापित किया जाएगा जब मानवता पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य के निर्माण के अपने कार्य को पूरा कर लेता है।

नूह के बहुत समय बाद, परमेश्वर ने अब्राहम के साथ अपनी छुटकारे वाली तीसरी प्रमुख वाचा को बाँधा।

अब्राहम

उत्पत्ति 15, 17 और 22 जैसे अनुच्छेदों के अनुसार, परमेश्वर ने अब्राहम और उसके वंशजों को उसकी सेवा एक विशेष तरीके से करने के लिए बुलाया। पृथ्वी को भरना और वश में करना अभी भी मानवता का कार्य था। लेकिन इस समय से आगे, अब्राहम और उसके वंशजों ने पृथ्वी पर परमेश्वर के युगांतरकारी राज्य को लाने में केंद्रिय भूमिका अदा की। विशेष रूप से, वे एक विशेष राष्ट्र के रूप में चुने गए थे जिनके माध्यम से परमेश्वर शेष मानवता को छुटकारा प्रदान करेगा। यह तब शुरू हुआ जब परमेश्वर ने प्रतिज्ञा किए हुए देश में अपने राज्य की उपस्थिति को स्थापित किया। और यह जारी रहा जब अब्राहम, और बाद में इस्राएल देश ने, पृथ्वी की छोर तक प्रतिज्ञा किए हुए देश की सीमाओं को आगे बढ़ाया। जैसा कि उत्पत्ति 22:18 में परमेश्वर ने अब्राहम को बताया :

> **पृथ्वी की सारी जातियाँ अपने को तेरे वंश के कारण धन्य मानेंगी (उत्पत्ति 22:18)।**

अब्राहम के साथ परमेश्वर की वाचा ने इस अपेक्षा को जन्म दिया कि परमेश्वर के सांसारिक राज्य में एक ही राष्ट्र या लोग शामिल नहीं होंगे। इसके बजाय, यह अंततः "पृथ्वी पर सभी राष्ट्रों" के सदस्यों को शामिल करेगा।

अब्राहम के कई शताब्दियों के बाद, परमेश्वर ने मूसा के साथ छुटकारे वाली अपनी चौथी प्रमुख वाचा को बाँधा।

मूसा

मूसा ने कई स्थानों पर उसके साथ परमेश्वर की वाचा के बारे में लिखा। कई बार, उसने पुष्टि की कि मूसा वाली वाचा ने आदम, नूह और अब्राहम के साथ आरम्भिक वाचा शामिल किया है और जारी रखा है। लेकिन उसने एक नई क्रियाशील को भी प्रकट किया जिसने परमेश्वर के सांसारिक राज्य के लिए अतिरिक्त अपेक्षाओं को जन्म दिया। लैव्यवस्था 26 और व्यवस्थाविवरण 4, 30 जैसे अनुच्छेदों में, परमेश्वर ने प्रकट किया कि उसकी वाचा वाले विशेष लोग हमेशा उसके प्रति वफादार नहीं होंगे। जैसा कि पहले वाली वाचा के प्रशासन के साथ है, मूसा वाली वाचा ने वाचा की आशीषों को लाने के लिए परमेश्वर की प्रतिबद्धता का उल्लेख किया। लेकिन यदि उसके लोग उसकी अवज्ञा करते हैं, वह उन्हें दण्डित करेगा। व्यवस्थाविवरण 4:27-31 में मूसा ने जो लिखा उसे सुनिए :

> **और यहोवा तुम को देश देश के लोगों में तितर बितर करेगा, ... उनमें तुम थोड़े ही से रह जाओगे ... परन्तु वहाँ भी यदि तुम अपने परमेश्वर यहोवा को ढूँढ़ोगे, तो वह तुम को मिल जाएगा, शर्त यह है कि तुम पूरे मन से और अपने सारे प्राण से उसे ढूँढ़ो ... अन्त के दिनों में तुम अपने परमेश्वर यहोवा की ओर फिरो और उसकी मानना। क्योंकि तेरा परमेश्वर यहोवा दयालू ईश्वर है, वह तुम को न तो छोड़ेगा और न नष्ट करेगा, और जो वाचा उसने तेरे पितरों से शपथ खाकर बाँधी है उसको नहीं भूलेगा (व्यवस्थाविवरण 4:27-31)।**

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

वाचा में पाए जाने वाला सबसे बुरा अभिशाप प्रतिज्ञा किए हुए देश से निर्वासित होना होगा, जिसमें परमेश्वर के लोग दूसरे लोगों के बीच या राष्ट्रों में बिखरे होंगे। लेकिन परमेश्वर की दया उसे अपने लोगों को हमेशा के लिए त्यागने की अनुमति नहीं देती। जब वे अपने पाप से पश्चाताप करते हैं, उसे अपने पूरे दिल और प्राण से ढूँढ़ते हैं, तो वह उन्हें अपने अनुग्रह के कारण बहाल करेगा। इसके अलावा, मूसा ने लिखा कि परमेश्वर की दया इसे "अन्त के दिनों में" पूरा करेगी।

मूसा ने "अन्त के दिनों" के लिए जिस इब्रानी अभिव्यक्ति का इस्तेमाल किया था वह *बयाहारित हयामीम* था। यह अभिव्यक्ति अक्सर भविष्य के लिए एक सरल संदर्भ थी। लेकिन व्यवस्थाविवरण 4 में, मूसा ने एक भविष्य के युग की अपेक्षा को जन्म दिया, जब परमेश्वर अपने लोगों के लिए आशीषों की वाचा वाली सभी प्रतिज्ञाओं को और अपने शत्रुओं के ख़िलाफ़ दण्ड को पूरा करेगा।

इब्रानी पुराने नियम का जिस यूनानी भाषा में अनुवाद किया गया था उसे हम सेप्टुआजेंट कहते हैं। अनुवादकों ने मूसा के वचनों को भविष्य के अंतिम समयों के लिए संदर्भित होने के रूप में *बयाहारित हयामीम* को समझा। इसलिए, उन्होंने यूनानी अनुवाद का प्रतिपादन *एप एस्काटो टोन हेमेरॉन* (*ἐπ ἐσχάτῳ τῶν ἡμερῶν*) के रूप में किया, जिसका शाब्दिक अर्थ है "दिनों के अंत में।" आप इस वाक्यांश में *एस्काटो* (*ἐσχάτῳ*) शब्द को पहचान लेंगे। यह *एस्काटोस* शब्द का एक रूप है, जिससे हमें *"एस्काटोन" और "एस्काटोलॉजी" जैसे शब्द मिलते हैं।* बाद के बाइबल लेखकों ने भी मूसा के वचनों को इसी रीति से समझा। और उन्होंने "अंत के दिनों" को इस्राएल के बंधुआई से लौटने के बाद वाले भविष्य एवं अंतिम युग की आशीषों के रूप में सोचना जारी रखा।

> कई ऐसे मौके हैं जहाँ आप "अंत के दिनों" जैसे वाक्य का प्रयोग होता देखते हैं, उदाहरण के लिए, पेन्टाटचूक में। एक उदाहरण व्यवस्थाविवरण 4 के अन्त में है। अब, जब हम "अन्त के दिनों" वाले शब्द को देखते हैं तो हमें सावधान रहने की आवश्यकता है कि हम अपने आप से ही चीज़ों के अंतिम, निर्णायक अंत को समझने के लिए जल्दबाजी न करें, जैसे कि अंत समय। लेकिन उस संदर्भ में, जब इस्राएल प्रतिज्ञा किए हुए देश में प्रवेश करने वाले हैं तो मूसा उस बारे में चेतावनी दे रहा है, वह कहता है, कि जब वे प्रतिज्ञा किए हुए देश में प्रवेश करते हैं, यदि वे परमेश्वर की अवज्ञा करते हैं और सीनै की वाचा में जो अपेक्षित है उसका पालन नहीं करते हैं, तो अंततः उन्हें प्रतिज्ञा किए हुए देश से बाहर निकाला और बंधुआई में भेजा जा सकता है। इस तरह, जिस बात के बारे में मूसा चेतावनी दे रहा है या कह रहा है, वह है कि जब उन्हें देश से बाहर निकाला जाए, अवज्ञा के कारण वे बंधुआई में हों, तो वह कहता है, कि उन लोगों के लिए अभी भी उम्मीद है, जिन्हें चाहे देश से बाहर निकाल दिया गया है, कि "अन्त के दिनों" में वे परमेश्वर की ओर मुड़ सकते हैं और उसे पुकार सकते हैं और वह उन्हें वापस ला सकता है। और बेशक यह हमारे परमेश्वर की एक अद्‌भुत झलक है, जो अपने लोगों के लिए हार मानने को तैयार नहीं है, बल्कि उन्हें वापस लाना और उन्हें पुनर्स्थापित करना, जो उसके लिए महान ईश्वरीय-ज्ञान वाले आधार को बनाता है कि परमेश्वर कौन है, ऐसा परमेश्वर जो पुनर्स्थापित करता है, ऐसा परमेश्वर जो पाप के बाद भी छुड़ता है। यह यीशु मसीह में और जो कुछ वह अंततः अन्त में करेगा, उसमें परमेश्वर के अंत के कार्यों को समझने के लिए एक आधार प्रदान करता है।
>
> — एन्ड्रू एबरनथी, Ph.D.

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

दसवीं शताब्दी ईसा पूर्व की शुरूआत के करीब, परमेश्वर ने दाऊद के साथ पुराने नियम की पाँचवीं और अंतिम प्रमुख छुटकारे वाली वाचा को बाँधा।

दाऊद

दाऊद के साथ परमेश्वर की वाचा का ऐतिहासिक रिकॉर्ड 2 शमूएल 7 में वर्णित है। और इसके कई और विवरण भजन संहिता 89, 132 में दर्ज़ हैं। युगांतरकारी परिप्रेक्ष्य से, इस वाचा का सबसे महत्वपूर्ण विवरण यह था कि परमेश्वर दाऊद के घराने को, परमेश्वर के सांसारिक राज्य पर स्थायी राजवंश के रूप में स्थापित करेगा। भजन 89:34-37 में परमेश्वर के वचनों को सुनिए :

> **मैं अपनी वाचा न तोड़ूँगा और जो मेरे मुँह से निकल चुका है उसे न बदलूँगा ... [दाऊद] का वंश सर्वदा रहेगा, और उसकी राजगद्दी सूर्य के समान मेरे सम्मुख ठहरी रहगी; वह चन्द्रमा के समान, और आकाशमण्डल के विश्वासयोग्य साक्षी के समान सदा बना रहेगा (भजन 89:34-37)।**

कुछ धर्मविज्ञानियों ने कहा है कि जब पुराना नियम राजा के रूप में परमेश्वर के शासन को संदर्भित करता है, तो इसका प्राथमिक ध्यान केंद्रण उसके सक्रिय, अमूर्त शासन पर होता है। यह स्थान और नागरिकों के साथ एक *वास्तविक राज्य* नहीं है। अब, यह निश्चित रूप से सच है कि परमेश्वर के राज्य में उसका शासन *शामिल* है। लेकिन यह सिर्फ एक अमूर्त नहीं है। आदम को पृथ्वी को भरना और उसे वश में करना था। नूह से सृष्टि में स्थिरता की प्रतिज्ञा की गई थी। अब्राहम को एक राष्ट्र के पिता के रूप में चुना गया था जो सभी देशों को बचाएगा। मूसा ने प्रतिज्ञा किए हुए देश पर ध्यान दिया। और दाऊद को आश्वस्त किया गया था कि उसका राजवंश हमेशा के लिए परमेश्वर के सांसारिक राज्य पर शासन करेगा। परमेश्वर का राज्य एक वास्तविक स्थान है, जो वास्तविक लोगों से आबाद है। और पुराने नियम की वाचाओं की महान अपेक्षा है कि *वह* स्थान और *वे* लोग परमेश्वर के साथ हमेशा के लिए पूर्ण सामंजस्य में रहेंगे।

अभी तक हमने पुराने नियम की अपेक्षाओं पर विचार किया है जो सृष्टि और छुटकारे के इतिहास से निकलते हैं। इस तरह, अब हम अन्त के समय की भविष्यवाणी वाले विवरणों की ओर बढ़ने के लिए तैयार हैं।

अन्त का समय

दाऊद की राजशाही के दौरान, इस्राएल देश प्रतिज्ञा किए हुए देश में अच्छी तरह से स्थापित था। और उसके पुत्र सुलेमान के शासनकाल के दौरान, राज्य की सीमाएं और भी आगे तक फैल गई थी। दुःख की बात है कि बाद की पीढ़ियों में, परमेश्वर के लोगों ने परमेश्वर के ख़िलाफ़ विद्रोह किया और उग्र मूर्तिपूजा और पाप में पड़ गए।

सुलेमान के पुत्र रेहोबाम के शासनकाल के दौरान, 930 ई.पू. में, देश को दो भागों में विभाजित किया गया था। उत्तरी राज्य ने “इस्राएल” नाम को बरकरार रखा और दक्षिणी राज्य ने “यहूदा” नाम लिया। कोई भी राज्य परमेश्वर के प्रति पूरी रीति से विश्वासयोग्य नहीं था, लेकिन इस्राएल स्पष्ट रूप से बदतर था। 722 ई.पू. तक, इस्राएल ने पश्चाताप करने की लगभग दो सौ वर्षों की भविष्यवाणी वाली चेतावनी को अस्वीकार कर दिया था। इसलिए, परमेश्वर ने इस्राएल को हराने और उसके कई लोगों को बंधुआई में ले जाने के लिए अश्शूरियों को भेजा। भविष्यदक्ताओं ने फिर यहूदा से पश्चाताप करने का आह्वान किया ताकि वे इस्राएल जैसे अन्त से बच सकें। लेकिन अंततः, यहूदा ने पाप करना जारी रखा। इसलिए, 586 ई.पू. में, परमेश्वर ने यहूदा की राजधानी यरूशलेम को नष्ट करने के लिए, और कई यहूदियों को बंधुआई में भी ले जाने के लिए बेबीलोन के लोगों को भेजा।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

भविष्यवक्ताओं ने समझाया कि ये भयावह घटनाएँ परमेश्वर की वाचा के अभिशाप थे, जिसका कारण इस्राएल और यहूदा का हठ और घोर विद्रोह था। लोगों ने परमेश्वर की वाचा को तोड़ दिया था, और उन्हें बंधुआई के रूप में एक कठोर अभिशाप को झेलना पड़ा — जैसे कि मूसा ने चेतावनी दी थी। लेकिन भविष्यवक्ताओं को बंधुआई के बाद पुनर्स्थापना की प्रतिज्ञा भी याद थी। इसलिए, उन्होंने परमेश्वर के लोगों को आश्वस्त करना जारी रखा कि अंतिम दिनों, या अंत समय में, परमेश्वर उन्हें पश्चाताप प्रदान करेगा। वह उन्हें क्षमा करेगा, उन्हें प्रतिज्ञा किए हुए देश में लौटा लाएगा, और अपने संसार भर के संपूर्ण राज्य में इतिहास का समापन करेगा। यशायाह 2:2-4 में यशायाह के वचनों को सुनिए :

> अन्त के दिनों में ... बहुत से देशों के लोग आएँगे, और कहेंगे, "आओ हम यहोवा के पर्वत पर चढ़कर याकूब के परमेश्वर के भवन में जाएँ। तब वह हमको अपने मार्ग सिखाएगा, और हम उसके पथो पर चलेंगे।" क्योंकि यहोवा की व्यवस्था सिय्योन से और उसका वचन यरूशलेम से निकलेगा। वह जाति जाति का न्याय करेगा, और देश देश के लोगों के झगड़ों को मिटाएगा। और वे अपनी तलवारें पीटकर हल का फाल और अपनी भालों को हँसिया बनाएँगे। तब एक जाति दूसरी जाति के विरूद्ध फिर तलवार न चलाएगी, न लोग भविष्य में युद्ध की विद्या सीखेंगे (यशायाह 2:2-4)।

ध्यान दें कि परमेश्वर के पूर्ण सांसारिक राज्य की यह तस्वीर "अन्त के दिनों में" इस्राएल के बंधुआई से लौटने के बाद महसूस की जानी थी। इस वाक्यांश का यही उपयोग मीका 4:1 और होशे 3:5 जैसे स्थानों पर दिखाई देता है।

इब्रानी में, "अन्त के दिनों में" वाला यशायाह का वाक्यांश *बयाहारित हयामीम* है — वे ही शब्द जिनका उपयोग मूसा ने व्यवस्थाविवरण 4:30 में किया। और यह उसी युगांतरकारी राज्य को संदर्भित करता है जो कि मूसा के मन में था। लेकिन इस भविष्यवाणी ने किस तरह की आशाओं को पैदा किया?

एक उम्मीद जो याशायाह ने जताई वह थी कि इस्राएल की बंधुआई के समाप्त होने के बाद, परमेश्वर यरूशलेम में अपने मंदिर में अपने सिंहासन से पूरी पृथ्वी पर राज्य करेगा। दूसरा यह था कि पृथ्वी पर प्रत्येक राष्ट्र उत्सुकतापूर्वक उस राज्य के हिस्से के रूप में सेवा करेंगे। लोग परमेश्वर की व्यवस्था को सीखना चाहेंगे ताकि वे सही तरीके से उसकी आज्ञापालन कर सकें। एक और उम्मीद यह थी कि परमेश्वर के शासन में उसका धर्मी न्याय शामिल रहेगा। एक और बात यह थी कि प्रत्येक राष्ट्र ऐसे स्थिर शांति में रहेगा कि वे वास्तव में अपने हथियारों से छुटकारा पा लेंगे। और परमेश्वर के युगांतरकारी राज्य की सबसे बड़ी अपेक्षाओं में से एक के बारे में, यशायाह के अंतिम शब्द सूचित करते हैं। जो उसने यशायाह 2:4 में लिखा उसे फिर से सुनिए :

> ... न लोग भविष्य में युद्ध की विद्या सीखेंगे (यशायाह 2:4)।

यहाँ, यशायाह ने *युद्ध के स्थायी अंत* का निहितार्थ दिया। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर का राज्य हमेशा के लिए शांति को स्थापित करेगा। या जैसा कि दानिय्येल 2:44 हमें बताता है :

> स्वर्ग का परमेश्वर एक ऐसा राज्य उदय करेगा जो अनन्त काल तक न टूटेगा, और न वह किसी दूसरी जाति के हाथ में किया जाएगा। ... वह सदा स्थिर रहेगा (दानिय्येल 2:44)।

लेकिन शायद परमेश्वर के युगांतरकारी राज्य की सबसे महान भविष्यवाणी वाली अपेक्षा यह है कि दाऊद का एक विशेष वंशज इसका राजा होगा। आपको याद होगा कि दाऊद वाली वाचा में, परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की कि दाऊद का घराना उसके पृथ्वी वाले राज्य पर स्थायी रूप से राज करेगा। खैर, इस

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

अपेक्षा को जिस एक तरीके से भविष्यद्वक्ताओं ने आगे बढ़ाया वह था कि दाऊद का *एक* वंशज हमेशा के लिए राज करेगा। राजाओं का एक सतत क्रम नहीं होगा; एक ही राजा होगा जिसने हमेशा के लिए राज किया। जैसा कि यशायाह 9:7 सिखाता है :

> उसकी प्रभुता सर्वदा बढ़ती रहेगी और उसकी शांति का अन्त न होगा। इसलिए वह उसकी दाऊद की राजगद्दी पर इस समय से लेकर सर्वदा के लिए न्याय और धर्म के द्वारा स्थिर किए और सम्भाले रहेगा (यशायाह 9:7)।

परमेश्वर के युगांतरकारी राज्य का भविष्यद्वक्ताओं वाला दर्शन इतना अद्‌भुत था कि यशायाह 65:17 और 66:22 जैसे स्थानों में, अपेक्षित राज्य को “नया आकाश और नई पृथ्वी” कहा जाता था।

> पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं ने कई तरीकों में, अंत समय वाले परमेश्वर के राज्य, उसके युगांतरकारी राज्य, की कल्पना की। पहला ... राज्य अचानक से आने वाला है। यह लड़खड़ाने वाला नहीं है। दूसरा, यह बहुत स्वाभाविक, बहुत राजनीतिक वाला होगा; यह एक ही में धर्म और राजनीति है। तीसरा, यह मसीहा के माध्यम से होने जा रहा है ... इस तरह मसीहा इसे शुरू करने वाला है, वह विद्रोह का नेतृत्व करने जा रहा है। अन्त में, बहुत बड़ी मात्रा में रक्तपात होने जा रहा है, क्योंकि इस्राएल अपने आसपास के पड़ोसियों पर पूरी तरह से हावी और अपने आसपास हर किसी को अपने अधीन में लाने जा रहा है ... लेकिन इसके साथ यह भी शामिल है, मेरा अर्थ है, कि यह परमेश्वर के और बड़े कार्यक्रम का हिस्सा है। सिर्फ राज्य ही नहीं आने जा रहा है, परमेश्वर का आत्मा आ रहा है, वहाँ पाप की क्षमा है, वहाँ पुनरुत्थान है, वहाँ नया आकाश और नई पृथ्वी है। यह और बड़े कार्यक्रम का हिस्सा है ... इसका राज्य, सब कुछ एक साथ काम कर रहे हैं, जो परमेश्वर के और बड़े कार्यक्रम का हिस्सा है, जिसका कि चरमोत्कर्ष नए आकाश और नई पृथ्वी पर स्पष्ट रूप से होगा।
>
> — डॉ. बेन्जामिन ग्लैड

अंततः, भविष्यद्वक्ताओं ने परमेश्वर से उन योजनाओं को पूरा करने की अपेक्षा की, जिनको उसने सृष्टि की शुरूआत में बनाया और छुटकारे के पूरे इतिहास के दौरान सविस्तार किया था। सृष्टि परमेश्वर के स्वर्गीय राज्य का एक पूर्ण विस्तार बन जाएगी, जो कि सिद्ध बनाए गए, छुड़ाए गए मनुष्यों द्वारा शासित और देखभाल की जाएगी। यह छुटकारे की वाचा में किए गए हर एक प्रतिज्ञा को पूरा करेगा, जिसमें परमेश्वर के शत्रुओं के लिए बुरी तरह से हार और उसके लोगों के लिए असीम आशीष शामिल है। और दाऊद का महान पुत्र, जिसे मसीहा या मसीह के नाम से जाना जाता है, यरूशलेम में दाऊद के पुनर्स्थापित सिंहासन से हमेशा के लिए राज करेगा।

अन्त समयों के लिए “सृष्टि के लक्ष्य” वाले हमारे अध्याय में अभी तक हमने पुराने नियम की अपेक्षाओं को देखा था। अब हम अपने दूसरे प्रमुख विषय की ओर मुड़ने के लिए तैयार हैं : उन अपेक्षाओं के लिए नए नियम की वास्तविकताएँ।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

नए नियम की वास्तविकताएँ

यीशु मसीह के व्यक्ति और कार्य को समझना नए नियम को समझने के लिए आधार है। और यह विशेष रीति तब सत्य है जब बात परमेश्वर के पृथ्वी वाले राज्य की हो। नया नियम *जोर देकर* कहता है कि यीशु, परमेश्वर के राज्य को पृथ्वी पर लाया, और इसके राजा के रूप में वह इसके ऊपर राज्य करता है। साथ ही, नया नियम बहुत अच्छी रीति से जानता है कि पुराने नियम में वर्णित राज्य की सभी आशीषों का हम वर्तमान में अनुभव नहीं करते हैं। तो, हम इस तनाव से कैसे निपटें? खैर, एक तरीका है, वह है, इस बारे में अधिक सिखाना कि यीशु वास्तव में क्या करने आया था, और वह क्या करना जारी रखता है, और भविष्य में क्या करने की उसकी योजना है।

हम तीन चरणों में पुराने नियम की अपेक्षाओं के लिए नए नियम की वास्तविकताओं पर विचार करेंगे। सबसे पहले, हम पुराने नियम की अपेक्षाओं से निकलने वाले कुछ ईश्वरीय-ज्ञान वाले घटनाक्रमों को संक्षेप में प्रस्तुत करेंगे। दूसरा, हम कुछ ऐतिहासिक जटिलताओं को देखेंगे जिनका सामना नए नियम की कलीसिया ने किया। और तीसरा, हम उन जटिलताओं के प्रकाश में उनकी समायोजित अपेक्षाओं को स्पष्ट करेंगे। आइए पुराने और नए नियम के बीच घटित होने वाले कुछ ईश्वरीय-ज्ञान वाले घटनाक्रमों के साथ शुरू करते हैं।

बाइबलीय धर्मविज्ञान का विकास

पुराने नियम के बंद होने और मसीह के आने के बीच की शताब्दियों में, रब्बीयों और अन्य यहूदी धर्मशास्त्रियों ने युगांत-विद्या का एक दृष्टिकोण विकसित किया, जिसे व्यापक स्वीकृति मिली। अपने सरलतम रूप में, यहूदी युगांत-विद्या ने माना कि संसार के इतिहास को दो महान युगों में विभाजित किया जा सकता है। उन्होंने पहले युग को “वर्तमान युग” कहा — या इब्रानी में *ओलाम हाज़ेह* । इसकी विशेषता थी पाप, निर्वासन, दुःख, और मृत्यु। “वर्तमान युग” तब शुरू हुआ जब आदम और हव्वा पाप में गिरे, और यह छुटकारे के युग से मेल खाता है जिसको हमने पहले पहचाना था।

यहूदी धर्मविज्ञानियों ने दूसरे युग को “आने वाला युग” — या इब्रानी में *ओलाम हाबा* कहा। यह भविष्य का अन्त का समय था, जब परमेश्वर का राज्य पृथ्वी को भर देगा। इसकी विशेषता होगी क्षमा, धार्मिकता, शांति और अनन्त जीवन।

पहली शताब्दी में, यहूदी संप्रदायों में युगों के बीच बदलावों के बारे में अलग-अलग विचार थे। लेकिन ज्यादातर सहमत थे कि एक विनाशकारी युद्ध होगा, जिसका परिणाम एक अचानक परिवर्तन होगा। उनका मानना था कि मसीहा या मसीह स्वर्गदूतों और विश्वासयोग्य मनुष्यों की एक सेना का नेतृत्व करेगा, जो इस्राएल के शत्रुओं पर विजय प्राप्त करेंगे। उसके बाद, दाऊद के सिंहासन के वारिस के रूप में, मसीहा राज्य को इस्राएल के लिए पुनर्स्थापित करेगा। उसके बाद से, परमेश्वर के राज्य के लिए पुराने नियम की सभी अपेक्षाएं पूरी हो जाएंगी, और परमेश्वर के लोग हमेशा के लिए शांति में रहेंगे।

> यीशु के दिनों के यहूदियों के लिए मसीहा और परमेश्वर के राज्य के बीच संबंध बहुत हद तक राजनैतिक था। ऐसा इसलिए है क्योंकि पुराने नियम से होते हुए मसीहा, या अभिषिक्त राजा ने, एक राष्ट्र का नेतृत्व किया जो स्थान व समय में एक राजनैतिक इकाई था — इस्राएल का राष्ट्र — और इस्राएल ने अपने शत्रुओं, पड़ोसी राष्ट्रों और लोगों की जातियों और दूसरे और लोगों के साथ युद्ध किया था। इसलिए, इस्राएल के पतन के बाद और जब इस्राएल बंधुआई में चला गया है और फिर लौटता है, लेकिन रोमी कब्जे और रोमी शासन के तहत, इस्राएल के लिए जो आशा ,है वह है कि, एक और राजनैतिक मसीहा या राजा इस्राएल को

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

> बंधनों से, गुलामी से बाहर निकालकर, उसके पूर्व गौरव या उससे भी बड़े गौरव की ओर ले जायेगा। इस तरह, यह पूरी तरह से समझने योग्य है, इसलिए जब यीशु दृश्य पर आता है और लोग आश्चर्य करना शुरू करते हैं कि क्या वह मसीहा है, तो उनकी कुछ राजनैतिक अपेक्षाएँ हैं कि वह क्या हासिल करेगा, लेकिन हम उससे पाते हैं कि उसका राज्य इस पृथ्वी का नहीं है।
>
> — डॉ. कॉन्स्टेन्टीन कैम्पबेल

आपको याद होगा कि 722 ई.पू. में इस्राएल का उत्तरी राज्य असीरिया की बंधुआई में चला गया, और 586 ई.पू. में यहूदा का दक्षिणी राज्य बेबीलोन की बंधुआई में कर दिया गया था। इसलिए, पहली शताब्दी में यीशु की सेवकाई के समय तक, वे कई शताब्दियों से विदेशी प्रभुत्व के तहत बंधुआई में रह रहे थे। उन पर अश्शूरियों, बेबीलोनियों, मादी और फारसियों, यूनानियों और रोमियों ने शासन किया था। फिर भी, परमेश्वर के बहुत लोग आशान्वित भी थे। उन्होंने अंतिम दिनों के बारे में उसकी प्रतिज्ञाओं पर भरोसा किया। कई लोगों ने यह भी सोचा कि दानिय्येल 2 में मूर्ति, और दानिय्येल 7 में जन्तुओं जैसी भविष्यवाणियों ने उन राज्यों को संदर्भित किया था जिनका उन पर शासन था, और संकेत दिया कि उनका उत्पीड़न समाप्त होने वाला था।

आश्चर्य की बात नहीं कि यीशु और नए नियम के लेखकों ने भी इतिहास के दो प्रमुख युगों के रूप में "वर्तमान युग" और "आने वाले युग" की बात की थी। और वे उस तरीके से काफी हद तक सहमत थे जिनमें यहूदी धर्मविज्ञानियों ने इन युगों को परिभाषित किया। उन्होंने सिखाया कि मसीहा पाप और मृत्यु के इस वर्तमान युग को समाप्त कर देगा और आने वाले युग में उसकी सभी आशीषों के साथ शुरूआत करेगा। मरकुस 10:29-30 में यीशु ने जो कहा उसे सुनिए :

> मैं तुम से सच कहता हूँ ... कि ऐसा कोई नहीं, जिसने मेरे और सुसमाचार के लिए घर या भाइयों या बहिनों या माता या पिता या बाल-बच्चों या खेतों को छोड़ दिया हो और अब इस समय सौ गुणा न पाए ... और परलोक में अनन्त जीवन (मरकुस 10:29-30)।

यीशु ने "वर्तमान युग" का "आने वाले युग" के साथ ठीक उसी तरह से अंतर किया जैसे उसके समकालीनों ने किया था। और उसने यह स्पष्ट कर दिया कि आशीषें उन लोगों के लिए आएंगी जो उसके पीछे चलेंगे। मरकुस 10:29 में, यीशु ने संकेत दिया कि वह मसीहा था जिससे इस वर्तमान युग से आने वाले युग के लिए बदलाव लाने की अपेक्षा की गई थी। उसने मत्ती 12:32 में भी कुछ ऐसा ही किया, जहाँ उसने स्वयं को मसीहा बताने के लिए "मनुष्य का पुत्र" वाला शब्द इस्तेमाल किया। और इफिसियों 1:20-21 में पौलुस के वचनों को सुनिए :

> [परमेश्वर] ने [मसीह] को ... स्वर्गीय स्थानों में अपनी दाहिनी ओर सब प्रकार की प्रधानता, और अधिकार, और सामर्थ्य, और प्रभुता के, और हर एक नाम के ऊपर, जो न केवल इस लोक में पर आनेवाले लोक में भी लिया जाएगा, बैठाया (इफिसियों 1:20-21)।

यीशु के समान, पौलुस ने बुराई के इस वर्तमान युग और आने वाले धन्य युग के बीच अंतर किया, और उसने मसीह, अर्थात मसीहा के साथ आने वाले युग की विजय को जोड़ा। पौलुस ने इसी भाषा का इस्तेमाल 1 कुरिन्थियों 2:6-8; 2 कुरिन्थियों 4:4; और 1 तिमुथियुस 6:17-19 में किया। ये और कई अन्य

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

अनुच्छेद दिखाते हैं कि यीशु और उसके प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं ने अंत समय की मूल संरचना के बारे में अधिकांश अन्य यहूदियों के साथ सहमति व्यक्त की।

बाइबलीयके संदर्भ में नए नियम की वास्तविकताओं पर विचार करने के बाद, आइए कुछ ऐतिहासिक जटिलताओं का पता लगाएं जिनका सामना नए नियम की कलीसिया ने किया।

ऐतिहासिक जटिलताएँ

नए नियम के युग में सभी को स्पष्ट था कि यीशु ने यहूदी धर्मविज्ञानियों की सभी अपेक्षाओं को पूरा नहीं किया। उसने उनके शत्रुओं पर विजय पाने के लिए परमेश्वर की सेनाओं का नेतृत्व नहीं किया। उसने यरूशलेम में दाऊद के सिंहासन को पुनर्स्थापित नहीं किया। और उसके विश्वासयोग्य लोग अभी भी पाप, दर्द, बीमारी और मृत्यु के साथ जूझ रहे थे। संक्षेप में, उसने इस युग को समाप्त नहीं किया, और ऐसा नहीं लगा कि वह आने वाले युग की कई महिमाओं लाएगा। इस कारण से, अधिकांश यहूदियों ने मसीहा के रूप में यीशु का तिरस्कार किया। तो, कलीसिया ने उसे क्यों स्वीकार किया? इन ऐतिहासिक जटिलताओं को देखते हुए, कलीसिया ने यह विश्वास करना क्यों जारी रखा कि यीशु ही मसीहा था?

नए नियम की कलीसिया द्वारा सामना की गई ऐतिहासिक जटिलताओं पर हमारी चर्चा चार भागों में विभाजित होगी। सबसे पहले, हम परमेश्वर के राज्य के आने से संबंधित पूरी न होने वाली अपेक्षाओं को देखेंगे। दूसरा, हम इन अनदेखी परिस्थितियों की व्याख्या के रूप में भविष्यवाणी वाले रहस्य का पता लगाएंगे। तीसरा, हम स्पष्टीकरण के एक घटक के रूप में वाचा की सशर्तता पर विचार करेंगे। और चौथा, हम हमारे स्पष्टीकरण के एक अन्य पहलू के रूप में दिव्य स्वतंत्रता का उल्लेख करेंगे। आइए कलीसिया की पूरी न हुई अपेक्षाओं के साथ शुरू करें।

अपेक्षाएँ जो पूरी न हुईं

अपने जीवन और सेवकाई के दौरान, यीशु ने अंतिम दिनों के लिए सभी समकालिन अपेक्षाओं को पूरा नहीं किया। और इसने कभी-कभी उसके शुरूआती अनुयायियों में तनाव और भ्रम पैदा किया। उन्हें तीन सच्चाइयों के साथ जुझना पड़ा था, जो स्वीकार करने में कठिन थे। पहला, वे पुराने नियम की शिक्षा पर विश्वास करते थे कि मसीहा इस वर्तमान युग का अंत करेगा और आने वाले युग की शुरूआत करेगा। दूसरा, वे इस तथ्य के प्रति समर्पित थे कि यीशु मसीहा है। लेकिन तीसरा, उन्होंने पहचाना कि यीशु ने वह कार्य नहीं किया जिसकी उन्हें अपेक्षा थी। उसने न तो इस वर्तमान युग को समाप्त किया न ही आने वाले युग की पूरी तरह से शुरूआत की थी।

यह समझना मुश्किल नहीं होना चाहिए कि क्यों आरंम्भिक विश्वासियों ने इन तथ्यों से संघर्ष किया होगा। किसी शक के बिना, यीशु ने पुराने नियम की इस शिक्षा की पुष्टि की, कि मसीहा पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य को लाएगा। उसने अपने सूली पर चढ़ाये जाने से पहले यह सिखाया था, और प्रेरितों ने उसके स्वर्गारोहण के बाद इसे सिखाना जारी रखा। और उसने एवं उसके प्रेरितों ने यह भी बताया कि यीशु ही वास्तव में मसीहा या मसीह था। लेकिन चूंकि ये सत्य निर्विवाद थे, तो यीशु ने, या मसीहा ने, आने वाले युग की उनकी अपेक्षाओं को क्यों पूरा नहीं किया?

इसकी बहुत संभावना है कि, अपने पुनरुत्थान के बाद, यीशु ने यह समझाने में समय बिताया कि उसने वह सब कुछ क्यों नहीं किया जिसकी उसके अनुयायियों ने अपेक्षा की थी। लूका ने लिखा कि यीशु के मृतकों में से जी उठने के बाद, उसने परमेश्वर के राज्य के बारे में प्रेरितों को सिखाने में चालीस दिन बिताए। इससे यह प्रतीत होगा कि यीशु ने इन सच्चाईयों में सामंजस्य बैठाने का बहुत प्रयास किया। लेकिन चालीस दिनों के प्रशिक्षण के अंत में भी, प्रेरित अभी भी सब कुछ स्पष्ट रूप से नहीं समझ पाए थे। प्रेरितों के काम 1:4-6 में लूका के अभिलेख को सुनिए :

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

> और उनसे मिल कर ... [यीशु] ने उन्हें आज्ञा दी : “यरूशलेम को न छोड़ो, परन्तु पिता की उस प्रतिज्ञा के पूरे होने की बाट जोहते रहो... परन्तु थोड़े दिनों के बाद तुम पवित्र आत्मा से बपतिस्मा पाओगे” अतः उन्होंने इकट्ठे होकर उससे पूछा, “हे प्रभु, क्या तू इसी समय इस्राएल का राज्य फेर देगा?” (प्रेरितों के काम 1:4-6)।

इस प्रश्न का अर्थ प्रेरितों की समझ में आया क्योंकि पुराना नियम कहता है कि अंतिम दिनों में परमेश्वर अपना आत्मा अपने लोगों पर उँडेलेगा। यहेजेकेल 39:27-29 में, और योएल 2:28–3:2 में, परमेश्वर ने स्पष्ट रूप से अपने आत्मा के उँडेले जाने और इस्राएल के लिए राज्य की स्थापना को जोड़ा। इसलिए, प्रेरितों के लिए इस संबंध में आश्चर्य करना स्वाभाविक था। लेकिन पुराने नियम ने कभी नहीं कहा कि इन दोनों घटनाओं को एक साथ होना था। जैसा कि यीशु ने प्रेरितों को प्रेरितों के काम 1:7-8 में बताया :

> उन समयो या कालों को जानना जिनको पिता ने अपने ही अधिकार में रखा है, तुम्हारा काम नहीं। परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा जब तुम सामर्थ्य पाओगे(प्रेरितों के काम 1:7-8).

यीशु ने जोर देकर कहा कि राज्य की समय सीमा को किसी भी व्यक्ति के लिए उजागर नहीं किया गया है। वास्तव में, मत्ती 24:36 और मरकुस 13:32 में, उसने यहाँ तक कहा कि यह उसे भी उजागर नहीं किया गया है — उसकी मानवता के दृष्टिकोण से। अब, इसका अर्थ यह नहीं है कि पुराने नियम ने अंतिम दिनों की घटनाओं की समय सीमा के बारे में बात नहीं की। लेकिन पुराने नियम ने कभी गारंटी नहीं दी कि ये घटनाएँ ठीक उसी तरह से घटित होंगी जैसे कि आरंभिक कलीसिया ने उन्हें घटित होने की अपेक्षा की थी।

ऐतिहासिक जटिलताओं की अपनी चर्चा में अभी तक, हमने आरंभिक कलीसिया के पूरे न हुए अपेक्षाओं को पेश किया। अब, आइए इन अनदेखी घटनाओं की व्याख्या के हिस्से के रूप में भविष्यवाणी से जुड़े रहस्य पर विचार करें।

भविष्यवाणी से जुड़े रहस्य

बाइबल के भविष्यवक्ताओं ने शायद ही कभी अपनी भविष्यवाणियों की पूर्ति के बारे में विस्तार से बताया। और वे हमेशा अपने द्वारा दी गई जानकारी में कुछ बातें छोड़ देते थे। परिणामस्वरूप, कई सारे ऐसे विविध तरीकें होते थे जिनसे उनकी भविष्यवाणियों की व्याख्या की जा सकती थी।

> कुछ भविष्यवाणियाँ जिन्हें हम पुराने नियम में पढ़ते है बहुत विशिष्ट हैं, इसलिए हम जानते हैं, उदाहरण के लिए, कि उद्धारकर्ता बेतलेहेम में पैदा होगा — यह वास्तव में विशिष्ट है, एक विशेष नगर — लेकिन पुराने नियम की ज्यादातर भविष्यवाणियाँ इसके जैसी नहीं है। वे आने वाले न्याय या भविष्य की आशीष की भविष्यवाणी हैं, और वे बहुत ही अविशिष्ट हैं। कुछ लोग यह भी सोच सकते हैं कि वे अस्पष्ट हैं। वे निश्चित रूप से बहुत ही सामान्य भविष्यवाणियाँ हैं। और मैं सोचता हूँ कि जिस तरह से ये भविष्यवाणियाँ दी गई उसमें परमेश्वर के उद्देश्य में और पवित्र आत्मा के दिमाग में बहुत ज्ञान है ... बाइबल की भविष्यवाणी के खुलेपन के बारे में कुछ ऐसी बात है जो इसे किसी भी समय किसी भी स्थान पर परमेश्वर के लोगों के लिए प्रासंगिक एवं उपयुक्त बनाते हैं।
>
> — डॉ. फिलिप्प रायकेन

पौलुस ने रोमियों 16:25-26 में जानबूझकर अस्पष्ट भविष्यवाणियों के बारे में बात की, जहाँ उसने उल्लेख किया,

> उस भेद के प्रकाश के अनुसार जो सनातन से छिपा रहा, परन्तु अब प्रगट होकर सनातन परमेश्वर की आज्ञा से भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकों के द्वारा ... बताया गया (रोमियों 16:25-26)।

यहाँ पर पौलुस ने जिस रहस्य का उल्लेख किया, वह अन्यजातियों के लिए बड़े पैमाने पर उद्धार के विस्तार से संबंधित था, जिसको उसने पहले ही रोमियों 11 में समझाया था। यह रहस्य मूल रूप से पुराने नियम के भविष्यवाणी वाले लेखनों में छिपा था। लेकिन यीशु ने इन भविष्यवाणियों को रहस्य प्रकट करने वाले तरीकों से समझने के लिए प्रेरितों को सिखाया।

जैसा कि हमने पहले बताया, आरंभिक कलीसिया की मसीहा वाली अपेक्षाओं के बावजूद, पुराने नियम की भविष्यवाणियाँ यह नहीं कहती कि परमेश्वर के युगांतरकारी राज्य को एकदम से आना है। वास्तव में, नए नियम का एक मुख्य लक्ष्य पाठकों को परमेश्वर के राज्य के उन पहलूओं को समझने में मदद करना प्रतीत होता है जो पहले के श्रोताओं के लिए रहस्यमय थे।

हम परमेश्वर के रहस्यमय समयसारणी के बारे में पुराने नियम के युगांतरकारी भविष्यवाणियों की तुलना, दूरी पर दो पहाड़ों के दृश्य के द्वारा सोच सकते हैं। पहली सदी के श्रोताओं के दृष्टिकोण से, "दोनों पहाड़" एक साथ करीब में प्रतीत होते थे। इसलिए, उन्होंने अपेक्षा की कि अंतिम दिनों की घटनाएँ उसी समय के आसपास घटेंगी। लेकिन जैसे-जैसे इतिहास आगे बढ़ा और पहाड़ पास नजर आए, तो यह स्पष्ट हुआ कि वे वास्तव में एक दूसरे से बहुत दूर थे। इसलिए, बाद के श्रोता पहले के छिपे रहस्य को समझ सके थे, विशेषकर, कि अंत समय को पेश करने वाली घटनाओं को प्रकट होने में लंबा समय लगेगा।

अब जबकि हमने पूरी न हुई अपेक्षाओं और भविष्यवाणी वाले रहस्य के संदर्भ में ऐतिहासिक जटिलताओं को देख लिया है, आइए वाचा वाली सशर्तता की ओर मुड़े।

वाचा से जुड़ी शर्तें

जैसा कि हमने पहले देखा था, परमेश्वर के लोगों के साथ उसकी वाचा की शर्तें थीं। यदि उसके लोग शर्तों का पालन करते हैं, तो उन्हें आशीषित किया जाएगा। लेकिन यदि उन्होंने अवज्ञा की, तो वे शापित किए जाएंगे। उदाहरण के लिए, उनकी अवज्ञा ने उन्हें प्रतिज्ञा किए हुए देश से निर्वासित कर दिया था। और क्योंकि भविष्यवाणी मौलिक रूप से एक उपकरण था जिसका उपयोग परमेश्वर ने अपने लोगों को अपनी वाचा का पालन करने के लिए प्रेरित करने के लिए किया, यह मौलिक रूप से सशर्त भी था। दूसरे शब्दों में, इस्राएल की पुनर्स्थापना के बारे में भविष्यवाणियाँ इस्राएल के पश्चाताप और नए सिरे से वाचा के पालन के शर्त पर आधारित थी।

पुराने नियम के भविष्यद्वक्ता यिर्मयाह ने यिर्मयाह 18 में इस मौलिक सशर्तता को समझाया। उस अध्याय में, उसने कुम्हार के घर अपनी यात्रा का वर्णन किया, जहाँ उसने मिट्टी को आकार देते हुए कुम्हार को देखा। जब बर्तन वैसा नहीं बना जैसा कुम्हार चाहता था, तो उसने अपनी पसंद और समझ के अनुसार, मिट्टी को फिर से आकार दिया। कुम्हार के काम के बारे में यिर्मयाह 18:6-10 में परमेश्वर क्या कहता है उसे सुनिए :

> हे इस्राएल के घराने, इस कुम्हार के समान तुम्हारे साथ क्या मैं भी काम नहीं कर सकता? ... जब मैं किसी जाति या राज्य के विषय कहूँ कि उसे उखाड़ूँगा या ढा दूँगा अथवा नष्ट करूँगा, तब यदि उस जाति के लोग जिसके विषय मैं ने यह बात कही हो अपनी बुराई से फिरें, तो मैं उस विपत्ति के विषय जो मैं ने उन पर डालने

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

> की ठानी हो पछताऊँगा। और जब मैं किसी जाति या राज्य के विषय कहूँ कि मैं उसे बनाऊँगा और रोपूँगा, तब यदि वे उस काम को करें जो मेरी दृष्टि में बुरा है, और मेरी बात न मानें, तो मैं उस भलाई के विषय जिसे मैं ने उनके लिए करने को कहा हो पछताऊँगा। (यिर्मयाह 18:6-10).

यहाँ, यिर्मयाह ने इंगित किया कि भविष्यवाणियाँ मौलिक रूप से सशर्त थीं, ठीक वाचाओं के जैसे जिनका वे प्रतिनिधित्व करते हैं। यह तब भी सच है जब भविष्यवाणियाँ इस्राएल देश से संबंधित हैं और तब भी जब जिस राज्य का वे उल्लेख करते हैं वह परमेश्वर का राज्य है।

बेशक, जब हम परमेश्वर द्वारा भविष्यवाणियों के पूरे होने को बदलने के बारे में बात करते हैं, तो हमें सावधानी बरतनी चाहिए। जब परमेश्वर सौगंध खाता है, या शपथ लेता है, या वाचा बाँधता है, तो ये *प्रतिज्ञाएँ पूरी तरह से* सुनिश्चित होती हैं। लेकिन प्रत्येक बात जो परमेश्वर कहता है वह प्रतिज्ञा नहीं होती है। और जब भविष्यवाणियों में प्रतिज्ञाएँ शामिल नहीं होती हैं, तो उनके पूरे होने की गारंटी नहीं होती है।

कुलपिता अब्राहम ने इसे स्पष्ट रूप से समझा। उत्पत्ति 15:7, 8 में, परमेश्वर ने कहा कि अब्राहम प्रतिज्ञा किए हुए देश का अधिकारी होगा। लेकिन यह अब्राहम को आश्वस्त करने के लिए पर्याप्त नहीं था कि यह जरूर से होगा। इसलिए, अब्राहम ने परमेश्वर से अपनी भविष्यवाणी को वाचा की प्रतिज्ञा में बदलने की माँग की।

भविष्यद्वक्ता दानिय्येल ने भी इस सिद्धांत को समझा। यिर्मयाह की सेवकाई के बाद की एक पीढ़ी के आसपास, दानिय्येल ने परमेश्वर के लोगों की सेवकाई की जो बाबुल में बंधुआई में रह रहे थे। बेशक, उन्हें निर्वासित कर दिया गया था, क्योंकि उन्होंने यिर्मयाह की चेतावनियों को नजरअंदाज कर दिया और पश्चाताप से इनकार कर दिया था। दानिय्येल ने देखा कि उनका निर्वासन समाप्त हो सकता है। यिर्मयाह 25:11, 12 के अनुसार, बंधुआई को 70 वर्षों तक होना चाहिए था। इसलिए, जब 70 वर्ष बीत गए, तो दानिय्येल ने उनके राज्य की बहाली के लिए परमेश्वर से प्रार्थना की। लेकिन जैसा कि हम दानिय्येल 9 नें पढ़ते हैं, लोग अभी भी परमेश्वर की वाचा वाली व्यवस्था को तोड़ रहे थे। दानिय्येल जानता था कि उनके पाप के बावजूद परमेश्वर उन पर दया कर सकता है। लेकिन उसे डर भी था कि परमेश्वर वाचा वाली उनकी सजा को बढ़ाने को भी चुन सकता है। अफसोस की बात है, कि उसके डर ठीक बात पर आधारित थे। बंधुआई समाप्त करने के बजाय, परमेश्वर ने इसे सात गुना बढ़ा दिया — इसे और 490 वर्ष तक बढ़ा दिया!

बढ़ाई गई यह बंधुआई यीशु के दिनों में पूरी होने वाली थी। परमेश्वर ने अपने निज पुत्र को मसीहा वाले राजा के रूप में भेजा और उसे पश्चाताप का प्रचार करने का कार्य दिया ताकि राज्य को पुनःस्थापित किया जा सके। मरकुस 1:15 ने यीशु के प्रचार को इस तरीके से प्रस्तुत किया :

> "समय पूरा हुआ है," [यीशु] ने कहा। "परमेश्वर का राज्य निकट आ गया है। मन फिराओ और सुसमाचार पर विश्वास करो!" (मरकुस 1:15)।

पूरी न हुई अपेक्षाओं से घिरी ऐतिहासिक जटिलताओं, भविष्यवाणी से जुडे रहस्य, और वाचा से जुड़ी शर्तों पर विचार करने के बाद, हम परमेश्वर की दिव्य स्वतंत्रता पर गौर करने के लिए तैयार हैं।

दिव्य स्वतंत्रता

पूरे पवित्र शास्त्र में परमेश्वर की स्वतंत्रता पर जोर दिया गया है और यह विशेष रूप से तब स्पष्ट है जब लोग अपेक्षाकृत सीधी भविष्यवाणियों के पूरे होने पर सवाल उठाते हैं। उदाहरण के लिए, जब दाऊद ने बतशेबा के साथ व्यभिचार किया, और बतशेबा गर्भवती हुई, तो नातान नबी ने भविष्यवाणी की कि उसका बेटा मर जाएगा। लेकिन दाऊद ने विश्वास नहीं किया कि यह एक जरूरी परिणाम था। वह जानता

था कि परमेश्वर बच्चे की मृत्यु के मंडरा रहे खतरे को हटा लेने के लिए स्वतंत्र था। इसलिए, दाऊद ने पश्चाताप किया और स्वयं को नम्र बनाया। अपने बेटे के मरने के बाद, 2 शमूएल 12:22 में दाऊद के पास कहने के लिए यह था :

> **जब तक बच्चा जीवित रहा, तब तक मैं यह सोचकर उपवास करता और रोता रहा। कि, "क्या जाने? यहोवा मुझ पर ऐसा अनुग्रह करे कि बच्चा जीवित रहे" (2 शमूएल 12:22)**

दाऊद ने पूछा, "कौन जानता है?" क्योंकि वह जानता था कि लड़के को बचाने या उसे मरने देने के लिए परमेश्वर पूरी तरह से स्वतंत्र था।

हिन्दी के शब्द "कौन जानता है?" इब्रानी वाक्यांश *मी योडेआ* का अनुवाद है। यही वाक्यांश योएल 2:14 में भी प्रगट होता है, जहाँ योएल ने भविष्यवाणी वाले दण्ड से बचने के उपाय के रूप में पश्चाताप को प्रोत्साहित किया। योएल के मामले में, हम नहीं जानते कि परमेश्वर ने कैसी प्रतिक्रिया की। लेकिन भविष्यद्वक्ता की समझ अपनी भविष्यवाणी के लिए स्पष्ट है : परमेश्वर ने अपने लोगों के खिलाफ दण्ड की भविष्यवाणी की थी। लेकिन वह उस दण्ड को रोकने, और यहाँ तक कि उसके बजाय आशीषित करने के लिए, अभी भी स्वतंत्र था।

हम *मी योडेआ* वाक्यांश को योना 3:9 में भी देखते हैं। इस मामले में, योना ने घोषणा की कि नीनवे को नष्ट कर दिया जाएगा। इसलिए, नीनवे के राजा ने यह आशा करते हुए कि परमेश्वर उन्हें छोड़ देगा, अपने पूरे नगर को पापों का पश्चाताप करने का आदेश दिया। यहाँ *मी योडेआ* ने राजा की आशा को व्यक्त किया कि परमेश्वर नीनवे के प्रति दया दिखाएगा। और इस मामले में परमेश्वर ने ऐसा ही किया; योना ने जिस दण्ड की भविष्यवाणी की थी उससे परमेश्वर पछताया।

जब हम उसके वचन पर उन अपेक्षाओं को आधार बनाने की पूरी कोशिश करते हैं, तब भी परमेश्वर हमारी अपेक्षाओं के अनुसार कार्य करने के लिए बाध्य नहीं है। प्रतिज्ञा के अभाव में, परमेश्वर भविष्यवाणी को जिस भी तरीके से उसे अच्छा लगता है उसमें पूरा करने के लिए स्वतंत्र है। इसलिए, जब पहली सदी के यहूदी धर्मविज्ञानियों से पूछा गया था कि मसीहा कब और कैसे राज्य को इस्राएल के लिए बहाल करने जा रहा है, तो शायद उन्हें कहना चाहिए था, "कौन जानता है?"

चाहे हम दूर खड़े पहाड़ों, कुम्हार के हाथ में मिट्टी, या दिव्य स्वतंत्रता के संदर्भ में पुराने नियम की भविष्यवाणी वाली अपेक्षाओं की कल्पना करें, एक बात स्पष्ट है : परमेश्वर ने अपने युगांतरकारी राज्य को पहली सदी में पूरा नहीं किया। सैंकड़ों वर्षों से, परमेश्वर के लोगों की अपेक्षा थी कि जब मसीहा आएगा, तो संसार के साथ सब ठीक हो जाएगा। लेकिन इसके बजाय, मसीहा को सूली पर चढ़ा दिया गया, और उसके लोगों को सताव का सामना करना पड़ा। शुक्र है, जैसा कि हमने देखा है, बाइबल ने इन वास्तविकताओं में सामंजस्य बिठाने के लिए कई तरीके प्रदान किए हैं।

अब जबकि हमने ईश्वरीय-ज्ञान के घटनाक्रमों और ऐतिहासिक जटिलताओं से संबंधित नए नियम की वास्तविकताओं को देखा लिया है, आइए आरंभिक कलीसिया की समायोजित अपेक्षाओं का पता लगाएं।

समायोजित अपेक्षाएँ

वर्तमान युग और आने वाले युग के बीच बदलाव के बारे में यीशु और उसके प्रेरित यहूदी धर्मविज्ञानियों से असहमत थे। जैसा कि हमने देखा, यहूदी धर्मविज्ञानियों ने एक अचानक, बलपूर्वक बदलाव की अपेक्षा की जो तेजी से इस युग को समाप्त करेगा और आने वाले युग, या अंत समय के राज्य

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

को एकदम से अचानक लाएगा। लेकिन यह अपेक्षा वाचा या भविष्यवाणी वाली प्रतिज्ञाओं पर आधारित नहीं थी। और जैसे-जैसे समय बीता, यह गलत था।

यहूदी अपेक्षाओं के विपरीत, यीशु और उसके प्रेरितों ने सिखाया कि युगों के बीच बदलाव एकदम से *नहीं* होगा। आने वाला युग यीशु के जीवन और पृथ्वी वाली से सेवा के साथ शुरू हुआ, लेकिन वर्तमान युग अभी तक समाप्त नही हुआ था। दूसरे शब्दों में, यीशु ने एक ऐसे समयकाल की स्थापना की जिसमें युगों का अतिव्यापन होता है, जो अंत समय के पूर्ण रूप से साकार होने लंबा खींचता है। परिणामस्वरूप, हम वर्तमान युग की कठिनाइयों को ठीक उसी समय झेलते हैं जब हम आने वाले युग की शुरूआती आशीषों का आनंद लेते हैं। यह वह दृष्टिकोण है जिसको कलीसिया ने अपनाया। इसे अकसर "उद्घाटित युगांत-विद्या" कहा जाता है, क्योंकि यह स्वीकार करता है कि परमेश्वर के युगांतरकारी राज्य की शुरूआत हो चुकी है, या मसीह में उद्घाटन किया जा चुका है। लेकिन यह अभी तक पूर्णता में नहीं आया है।

> बाइबल को समझने में सबसे महत्वपूर्ण ढांचों में से एक है जिसे हम कभी-कभी तकनीकी रूप से, "उद्घाटित युगांत-विद्या" कहते हैं। जब हम "युगांत-विद्या" शब्द को सुनते हैं हम कभी-कभी सोचते हैं, ओह, हम सबसे अंतिम दिनों, इतिहास के अंत की बात कर रहे हैं। और यह सच है, लेकिन नए नियम के अनुसार, जब यीशु पहली बार पृथ्वी पर आया, तो उसने अंतिम दिनों का उद्घाटन किया। पुराने नियम में इस बारे में भविष्यवाणियाँ कि जब परमेश्वर अपने लोगों को अंततः बचाएगा तो वह क्या करेगा, ये तब शुरू हो गए जब यीशु पृथ्वी पर आया, इस तरह अब हम मसीही लोगों के रूप में, एक ऐसे समय में रहते हैं जब पहले से परमेश्वर की कई प्रतिज्ञाएँ पूरी हो चुकी हैं, लेकिन हम अभी भी भविष्य में पूरी होने वाली अन्य प्रतिज्ञाओं की प्रतीक्षा कर रहे हैं। तो यह इस प्रकार की मौलिक उद्घाटित युगांतरकारी संरचना है जो कि ज्यादातर नए नियम और साथ में हमारे मसीही जीवनों को समझने के लिए मौलिक है।
>
> — डॉ. डगलस मू

यीशु ने कई दृष्टांतों को यह दिखाने के लिए बताया कि परमेश्वर का राज्य एक लंबे समय के अंतराल में बढ़ता है। उदाहरण के लिए, मत्ती 13 में, उसने फसल कटाई की ओर बढ़ते खेत से, एक सरसों के पेड़ से जो एक बीज से बढ़ता है, और आटे के बेच के माध्यम से फैलने वाले खमीर से राज्य की तुलना की। 39, 40 और 49 पदों में, उसने सिखाया कि राज्य "युग के अंत" तक बढ़ता रहेगा। केवल तभी "वर्तमान युग" अंततः समाप्त हो जाएगा और "आने वाला युग" अपनी संपूर्णता में उपस्थित होगा। यही कारण है कि नया नियम परमेश्वर के राज्य के तीन चरणों में पूरा होने की बात करता है। यह पहले ही आ चुका है, यह अभी आने की प्रक्रिया में है, और यह भविष्य में आएगा। तथ्य यह है कि ये सभी तीनों सत्य हैं। यीशु ने जिस उद्घाटित युगांत-विद्या को सिखाया उसके अनुसार, राज्य आ चुका है, आ रहा है और आएगा।

हम अंतिम दिनों की समयावधि को तीन मुख्य भागों में विभाजित कर सकते हैं। अंतिम दिन उद्घाटन के साथ शुरू हुए। यह तब हुए जब दोनों युग यीशु के जीवन और पृथ्वी वाली सेवकाई के दौरान अतिव्यापन करने लगे, जिसमें प्रेरितों द्वारा किए गए आधारभूत काम शामिल हैं। निरंतरता उद्घाटन के बाद होता है। इस अवधि के दौरान कलीसिया मसीह की वापसी के लिए परमेश्वर के राज्य का निर्माण करती है। अंत में, परिपूर्णता सभी आशीषों को लाता है जिनकी अपेक्षा अंत समय के लिए पुराने नियम ने

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

की। यह वर्तमान युग को समाप्त करता है और स्थायी रूप से इसे आने वाले युग के साथ प्रतिस्थापित करता है।

उद्घाटन के साथ शुरू करते हुए, आइए अंतिम दिनों की समयावधि पर ज्यादा बारीकी से नजर डालें। स्पष्ट शिक्षा और दृष्टांतों के माध्यम से, यीशु ने सिखाया कि उसने पहले ही परमेश्वर के पृथ्वी वाले राज्य का उद्घाटन कर दिया था।

उद्घाटन

उदाहरण के लिए, लूका 16:16 में, यीशु ने कहा :

> **व्यवस्था और भविष्यद्वक्ता यूहन्ना तक रहे। उस समय से, परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार सुनाया जा रहा है, और हर कोई उस में प्रबलता से प्रवेश करता है (लूका 16:16)।**

इसी तरह, मत्ती 11:12 में, यीशु ने अपने श्रोताओं को बताया :

> **यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के दिनों से अब तक स्वर्ग के राज्य में बलपूर्वक प्रवेश होता रहा है (मत्ती 11:12)।**

कम से कम यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के समय से संसार में राज्य आगे बढ़ रहा है और उन्नति कर रहा है। और, जैसा कि बाइबल सिखाती है, यूहन्ना के कार्य ने यीशु की सार्वजनिक सेवा के लिए मार्ग तैयार किया। लेकिन यीशु ने राज्य के उद्घाटन के बारे में न सिर्फ दृष्टांतों को सिखाया और बताया। उसने यह भी तर्क दिया कि उसके आश्चर्यकर्मों ने परमेश्वर के राज्य की उपस्थिति को प्रमाणित किया। जैसा कि उसने लूका 11:20 में कहा :

> **यदि मैं परमेश्वर की सामर्थ्य से दुष्टात्माओं को निकालता हूँ, तो परमेश्वर का राज्य तुम्हारे पास आ पहुँचा है (लूका 11:20)।**

उसने मत्ती 12:28 में भी इसी बात को जोर देकर कहा।

यीशु ने सिखाया कि दुष्ट आत्माओं को बाहर निकालने के लिए, उन्हें पहले हराना पड़ता है। और एकमात्र तरीका जिससे यह हो सकता है वह है कि यदि कोई ज्यादा शक्तिशाली ताकत उन पर जीत हासिल करे। चूँकि दुष्ट आत्माओं को स्पष्ट रूप से हराया जा चुका था, इसका अर्थ था कि परमेश्वर ने अपनी सेनाओं को आगे बढ़ाया, अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त की, और अपने राज्य का निर्माण किया था।

कलीसिया पर पवित्र आत्मा का उँडेला जाना एक और संकेत था कि अंतिम दिन शुरू हो गए थे। प्रेरितों के काम 2:1-11 हमें बताता है कि, पिन्तेकुस्त के दिन, पवित्र आत्मा कलीसिया पर उँडेला गया था। इस उँडेले जाने ने उन्हें अन्य भाषाओं में बोलने के लिए सक्षम बनाया, और आग की जीभों के साथ प्रत्यक्ष रूप से चिह्नित किया। इस घटना के लिए प्रेरितों के काम 2:16-17 में पतरस की व्याख्या को सुनिए :

> **परन्तु यह वह बात है, जो योएल भविष्यद्वक्ता के द्वारा कही गई थी : “परमेश्वर कहता है, कि अन्त के दिनों में ऐसा होगा कि मैं अपना आत्मा सब मनुष्यों पर उँडेलूँगा” (प्रेरितों के काम 2:16-17)।**

यहाँ, पतरस ने पवित्र आत्मा के उँडेले जाने को एक प्रमाण के रूप में देखा कि अंतिम दिनों की शुरूआत हो चुकी है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

शायद राज्य के उद्घाटन के लिए नया नियम जिस तरीके को सबसे ज्यादा बार संदर्भित करता है, हालांकि, यह “सुसमाचार” शब्द के माध्यम से है। प्राचीन संसार में, “सुसमाचार” या “शुभ संदेश” आमतौर पर एक राजा के लिए संदर्भित है जिसने नए क्षेत्र को जीत लिया था। लोगों के लिए नई सरकार की घोषणा करने हेतु, राजा के पास दूत रहते थे जो “शुभ संदेश” की घोषणा करेंगे कि अब वह उनका नया राजा था। इसी तरह, पुराने नियम ने इस्राएल की बंधुआई के बाद उनके पुनः स्थापित राज्य का उल्लेख करने के लिए इस शब्द का उपयोग किया। यशायाह 52:7 में यशायाह ने जो लिखा उसे सुनिए :

> पहाड़ों पर उसके पाँव क्या ही सुहावने हैं जो शुभ समाचार लाता है, जो शान्ति की बातें सुनाता है और कल्याण का शुभ समाचार और उद्धार का सन्देश देता है, जो सिय्योन से कहता है, “तेरा परमेश्वर राज्य करता है!” (यशायाह 52:7)।
>
> यशायाह विशेषकर उन लोगों से बात कर रहा है जो बंधुआई में जाने का अनुमान लगा रहे हैं, या शायद ऐसे लोग जो पहले ही बंधुआई में हों, वे सुन रहे हैं कि यशायाह ने क्या लिखा, या उसे पढ़ रहे हैं जो उसने लिखा, और वे आनंदित हैं क्योंकि उनके संदर्भ में “शुभ संदेश” का अर्थ है कि हमारे राजा ने जीत हासिल की है, उसकी सेना युद्ध में सफल रही है, और वह हमें हमारी गुलामी से छुड़ा रहा है। वह हमें हमारे देश में वापस घर ले जाने जा रहा है। और हम देखते हैं कि यशायाह उस बात को पकड़ता है कि अतीत में परमेश्वर ने यह कैसे किया है। पद 4 में, वह इस बारे में बात करता है कि परमेश्वर ने मिस्र में वह कैसे किया और उन्हें मिस्र से छुड़ाया। और पद 4 में ही वह कहता है, अश्शूर में, अश्शूरी लोग आए, लेकिन मैं तुम्हें छुड़ाने जा रहा हूँ। और यही, बेबीलोन की बंधुआई के साथ भी है, वहाँ यह आशा है कि परमेश्वर एक बार फिर विजयी होगा ... इसलिए यीशु ने, जब उसने यशायाह से “शुभ संदेश” की इस अवधारणा को लिया, तो वह लोगों के जीवनों में वास्तविक छुटकारे के बारे में बाते करता है, जहाँ सुसमाचार लोगों को स्वतंत्र करता है, सुसमाचार जमीनी हकीकत को बदलता है, और हमारा परमेश्वर विजयी होता है।
>
> — डॉ. ग्रेग पैरी

यशायाह के मन में वे दूत थे जो परमेश्वर के शत्रुओं के ऊपर परमेश्वर की जीत की घोषणा कर रहे थे। और इसका अर्थ था कि परमेश्वर राज कर रहा था — उसका राज्य स्थापित हो गया था। इसी कारण से यीशु और उसके प्रेरितों ने यशायाह से “सुसमाचार” शब्द को लिया। वे चाहते थे कि लोग यह समझें कि परमेश्वर ने अपने शत्रुओं को हराया था और पृथ्वी पर राज करना शुरू कर दिया था। या इसे उन शब्दों में कहें जिन्हें हम उपयोग कर रहे हैं, परमेश्वर ने अपने पृथ्वी वाले राज्य का उद्घाटन किया था।

अंतिम दिनों का दूसरा चरण राज्य की निरंतरता है।

निरंतरता

परमेश्वर के राज्य की निरंतरता मसीह के पहले आगमन से लेकर उसके लौटने तक फैलती है। इस समय के दौरान, आने वाले युग की कई आशीषों का हम आंनद लेते हैं, जैसे कि पवित्र आत्मा के वरदान और हमारे आत्मिक शत्रुओं पर विजय लेकिन हम पाप, बीमारी और मृत्यु जैसे इस युग की कठिनाइयों को भी झेलते हैं। फिर भी, हमारे पास इस तनाव में दृढ़ रहने के लिए महान कारण हैं, यह जानते हुए कि हमारा काम परमेश्वर के राज्य का विस्तार करना है, और यह कि वह हमारी वफादारी को पुरस्कृत करेगा।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

इससे पहले इस अध्याय में, हमने यीशु के दृष्टांतों को इस बात के प्रमाण के रूप में बताया कि परमेश्वर का राज्य पृथ्वी पर लम्बे समय के दौरान बढ़ता है। हमने उल्लेख किया कि मत्ती 13 में, यीशु ने फ़सल कटाई की ओर बढ़ते खेत से, एक सरसों के पेड़ से जो एक बीज से बढ़ता है, और आटे के बेच को बढ़ाने वाले खमीर से राज्य की तुलना की। ये दृष्टांत समझाते हैं कि कैसे परमेश्वर का राज्य, मुख्यतः कलीसिया के कार्य के द्वारा पूरे संसार भर में फैलता और बढ़ता है। मत्ती 28:18-20 में, यीशु ने कलीसिया को निम्न निर्देश दिए :

> स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है। इसलिए तुम जाओ, सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ, और उन्हें पिता, और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो, और उन्हें सब बातें जो मैं ने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओ। और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदा तुम्हारे संग हूँ (मत्ती 28:18-20)।

इस अनुच्छेद में, जिसे आमतौर पर महान आदेश कहा जाता है, यीशु ने इंगित किया कि उसे राजा के रूप में अधिकार प्राप्त हुआ था, यह कि कलीसिया उसके राज्य को सभी जातियों में फैलाएगी, और कि यह काम युग के एकदम अन्त तक जारी रहेगा।

यह महान आदेश सभी राष्ट्रों में यीशु के राज्य की सीमाओं का विस्तार करने के लिए, और इस युग के अन्त तक इस कार्य को जारी रखने के लिए हमें बुलाता है। इसके अलावा, जैसे ही हम चेले बनाते हैं, वे परमेश्वर के मसीहा वाले युगांतरकारी राज्य में नागरिकों के रूप में हमारे साथ मिल जाते हैं। जैसा कि पौलुस ने अपने पाठकों को कुलुस्सियों 1:13 में बताया :

> [परमेश्वर] ने हमें अन्धकार के वश से छुड़ाकर अपने प्रिय पुत्र के राज्य में प्रवेश कराया (कुलुस्सियों 1:13)

और जैसा कि यूहन्ना ने प्रकाशितवाक्य 1:5-6 में घोषणा की :

> [यीशु] ने अपने लहू के द्वारा हमें पापों से छुड़ाया है, और हमें एक राज्य और अपने पिता परमेश्वर के लिए याजक भी बना दिया (प्रकाशितवाक्य 1:5-6)।

निरंतरता के इस समय के दौरान में भी, यीशु अपने राज्य को उन तरीकों से आगे बढ़ा रहा है जो कलीसिया के विस्तार से कम दृश्यमान हैं। उदाहरण के लिए, वह अपने पृथ्वी वाले राज्य पर राज करता है और स्वर्ग में अपने सिंहासन से अपने शत्रुओं से लड़ता है। जैसे कि पौलुस ने 1 कुरिन्थियों 15:25 में लिखा :

> जब तक वह अपने बैरियों को अपने पाँवों तले न ले आए, तब तक [यीशु] का राज्य करना अवश्य है (1 कुरिन्थियों 15:25)।

यीशु पहले ही से अपने राज्य पर राज कर रहा है, और वह अपने राज्य को तब तक आगे बढ़ाता रहेगा जब तक कि उसके सभी शत्रु पराजित नहीं हो जाते।

अंतिम दिनों की तीसरी और आख़िरी समावधि राज्य की परिपूर्णता है, जब वर्तमान युग आने वाले युग के द्वारा पूरी तरह से बदल दिया जाता है।

परिपूर्णता

जैसा कि हमने इस अध्याय के शुरूआत में देखा, पुराना नियम परमेश्वर के राज्य के इतिहास की रूपरेखा को तीन चरणों में देता है : ब्रह्माण्ड और उसके जीवों की शुरूआती सृष्टि; मानवता के पाप में

गिरने के कारण आवश्यक हुआ छुटकारे का एक लंबा समयकाल; और अंतिम समय, जब परमेश्वर का राज्य पृथ्वी को भर देता है।

पुराना नियम अन्त समय को एक ऐसे समय के रूप में चित्रित करता है जब मसीहा पाप और मृत्यु के इस युग को समाप्त करेगा और यरूशलेम में दाऊद के सिंहासन से हमेशा के लिए राज करेगा। उसका शासन सृष्टि को फिर से नया बनायेगा, पूरे संसार भर में शांति को सुदृढ़ करेगा, पूर्ण न्याय और धार्मिकता को सुनिश्चित करेगा, और हमेशा के लिए रहेगा। और नया नियम सृष्टि की अंतिम स्थिति और परमेश्वर के राज्य के बारे में पराने नियम से सहमत है। लेकिन नया नियम हमें और ज्यादा जानकारी देता है जैसे कि यीशु को मसीहा के रूप में पहचानना। लूका 1:32-33 में, स्वर्गदूत ने इन वचनों के साथ यीशु के जन्म की घोषणा की :

> **प्रभु परमेश्वर उसके पिता दाऊद का सिंहासन उसको देगा, और वह याकूब के घराने पर सदा राज्य करेगा, और उसके राज्य का अन्त न होगा (लूका 1:32-33)।**

लेकिन नए नियम के अनुसार, पुराने नियम द्वारा पहले से देखी गई सबसे महान युगांतरकारी आशीषें परमेश्वर के राज्य की परिपूर्णता तक पूरी नहीं होंगी। इनमें यीशु का वापस लौटना, मृतकों का सार्वजनिक पुनरुत्थान और अंतिम न्याय, वर्तमान सृष्टि का विनाश, और नए आकाश और नई पृथ्वी की सृष्टि शामिल है। इसके अतिरिक्त, 1 कुरिन्थियों 15:52-54, हमें आश्वस्त करता है कि नई सृष्टि में, हम महिमामय शरीरों के साथ सदा के लिए रहेंगे। मृत्यु पूरी तरह से नष्ट हो जाएगी, और हम फिर कभी भी दुःखी नहीं होंगे। और 2 पतरस 3:10, 13 में, प्रेरित पतरस ने यह जानकारी जोड़ी, कि वर्तमान सृष्टि आग के द्वारा नष्ट की जाएगी। यह सृष्टि को पाप की भ्रष्टता से शुद्ध करेगी, और नए आकाश और नई पृथ्वी के मार्ग तैयार करेगी।

नई जानकारी की सबसे बड़ी मात्रा प्रेरित यूहन्ना से आती है, जिसने प्रकाशितवाक्य की पुस्तक को लिखा। उस पुस्तक के अंत के करीब, यूहन्ना ने परमेश्वर के युगांतरकारी राज्य के नए आकाश और नई पृथ्वी का वर्णन किया, जिसमें उसकी राजधानी वाला नगर, यरूशलेम शामिल है। प्रकाशितवाक्य 21:1-4 में यूहन्ना के विवरण को सुनिए :

> **फिर मैं ने नये आकाश और नयी पृथ्वी को देखा, क्योंकि पहला आकाश और पहली पृथ्वी जाती रही थी, और समुद्र भी न रहा। फिर मैं ने पवित्र नगर नए यरूशलेम को स्वर्ग से परमेश्वर के पास से उतरते देखा, वह उस दुल्हन के समान थी जो अपने पति के लिए सिंगार किए हो। फिर मैं ने सिंहासन में से किसी को ऊँचे शब्द से यह कहते हुए सुना, “देख परमेश्वर का डेरा मनुष्यों के बीच में है, वह उनके साथ डेरा करेगा। और वे उसके लोग होंगे, और परमेश्वर आप उनके साथ रहेगा और उनका परमेश्वर होगा। वह उनकी आँखों से सब आँसू पोंछ डालेगा। और इसके बाद मृत्यु न रहेगी, और न शोक, न विलाप, न पीड़ा रहेगी; पहली बातें जाती रहीं” (प्रकाशितवाक्य 21:1-4)।**

हम बाद में इस श्रृंखला में इन घटनाओं का विस्तार से पता लगाएंगे। इसलिए अभी के लिए, हम सिर्फ यह कहना चाहते हैं कि नए नियम की वास्तविकताएँ कभी भी पुराने नियम से असहमत नहीं होती हैं। इसके बजाय, वे मसीहा के रूप में यीशु के कार्य से संबंधित ऐतिहासिक जटिलताओं के प्रकाश में पुराने नियम की समझ बनाने में हमारी मदद करते हैं। और वे हम में से उन लोगों के लिए, जो वफादारी से उसका पालन करते हैं, और अधिक आशा एवं आशीष का आश्वासन प्रदान करते हैं।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

उपसंहार

“सृष्टि का लक्ष्य” नामक इस अध्याय में, सृष्टि, उद्धार और अंतिम समय से संबंधित पुराने नियम की अपेक्षाओं के परिप्रेक्ष्य में हमने इतिहास को देखने के द्वारा शुरूआत की। फिर, हमने ईश्वरीय-ज्ञान वाले घटनाक्रमों, ऐतिहासिक जटिलताओं, और समायोजित अपेक्षाओं पर ध्यान केंद्रित करने के द्वारा उन अपेक्षाओं से संबंधित नए नियम की कुछ वास्तविकताओं पर विचार किया।

हम एक अद्‌भुत समय में रहते हैं। हजारों वर्षों से, पुराना नियम अंतिम दिनों के लिए ऐसे समय के रूप में अपेक्षा लगाए था जब परमेश्वर अपने राज्य को पृथ्वी पर लाएगा। पुराने नियम के संतों की यही महान आशा थी। और उस राज्य में रहने का सौभाग्य हमें मिला है। सच है, कि यह अभी तक सिद्ध नहीं है; परिपूर्णता अभी भी हमारे भविष्य में है। लेकिन फिर भी, हम पहले से ही राज्य की कई आशीषों का आनन्द लेते हैं। हमारे पास पवित्र आत्मा के वरदान हैं। मसीह स्वर्ग से राज्य कर रहा है और हमारे आत्मिक शत्रुओं को पराजित कर रहा है। और परमेश्वर स्पष्ट रूप से अपने राज्य को संसार भर में फैला रहा है। इसलिए, भले ही हम पाप और उसके परिणामों के साथ संघर्ष करना जारी रखते हैं, फिर भी हमें विश्वास हो सकता है कि परिपूर्णता आएगी, और हम परमेश्वर के साथ नए आकाश और नई पृथ्वी पर हमेशा के लिए रहेंगे।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।